Shikshan Sanshodhan : Journal of Arts, Humanities and Social Sciences ISSN(o): 2581-6241
Monthly, Peer-Reviewed, Refereed, Indexed Journal Impact Factor: 7.384
Volume - 8, Issue - 7, July - 2025

DOIs:10.2018/SS/202507023 --:-- Research Paper / Article / Review

मॉडल प्राथमिक विद्यालयों एवं प्राथमिक विद्यालयों में अध्यापनरत अध्यापक एवं अध्यापिकाओं की संवेगात्मक बुद्धि का अध्ययन

[1] **हिमांशु शर्मा**, [2] **डॉ. प्रेम पाल सिंह**

[1]शोधार्थी, बी.एड./एम.एड. विभाग, शिक्षा एवं सहबद्ध विज्ञान संकाय, एम.जे.पी. रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली, भारत

[2]सहायक आचार्य, बी.एड./एम.एड. विभाग, शिक्षा एवं सहबद्ध विज्ञान संकाय, एम.जे.पी. रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली, भारत

Email: [1]himanshusharma451@gmail.com, Email: [2]ppsingh.ru@gmail.com

सारांश: वर्तमान अध्ययन का उद्देश्य प्राथमिक विद्यालयों एवं मॉडल प्राथमिक विद्यालयों में अध्यापनरत अध्यापकों एवं अध्यापिकाओं की सांवेगिक बुद्धि का अध्ययन करना था। शोध में शिक्षकों से आंकड़े एकत्र करने के लिए वर्णनात्मक शोध उपागम की सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया। शोध के लिए उत्तर प्रदेश राज्य के बरेली जिले में स्थित प्राथमिक विद्यालयों एवं मॉडल प्राथमिक विद्यालयों में से पहले चरण में लाटरी विधि से जनसंख्या का 10 प्रतिशत प्राथमिक विद्यालय एवं 10 प्रतिशत मॉडल प्राथमिक विद्यालयों का चयन किया गया। दूसरे चरण में इन्हीं चयनित विद्यालयों से कुल 452 शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं का चयन किया गया। शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि से सम्बन्धित आंकड़ों के संकलन हेतु स्वनिर्मित एवं प्रमाणीकृत अध्यापक संवेगात्मक बुद्धि मापनी (TEIS) का प्रयोग किया गया। मापनी का विश्वनीयता गुणांक 0.83 पाया गया था। अध्ययन के परिणाम इस प्रकार हैं- 1. प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों एवं अध्यापिकाओं की सांवेगिक बुद्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं था| 2. जबकि मॉडल प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों एवं प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों की सांवेगिक बुद्धि में सार्थक अन्तर पाया गया। 3. दोनों वर्ग के विद्यालयों की अध्यापिकाओं की सांवेगिक बुद्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं था। 4. मॉडल प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों एवं अध्यापिकाओं की सांवेगिक बुद्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं था। 5. जबकि मॉडल प्राथमिक विद्यालयों के कुल अध्यापकों एवं प्राथमिक विद्यालयों के कुल अध्यापकों की सांवेगिक बुद्धि में सार्थक अन्तर पाया गया। सेवारत अध्यापकों एवं भावी अध्यापकों की संवेगात्मक बुद्धिमत्ता को बढ़ाने के लिए आत्म-जागरूकता अभ्यास, संवेगात्मक विनियमन तकनीकों का अभ्यास, सहानुभूति प्रशिक्षण प्रदान करना और व्यावसायिक विकास कार्यशालाओं में भागीदारी को प्रोत्साहित करना आदि गतिविधियों को शामिल किया जा सकता है।

कुंजी शब्दः संवेगात्मक बुद्धि, मॉडल प्राथमिक विद्यालय, अध्यापक-अध्यापिका ।

1. प्रस्तावना

संवेगात्मक बुद्धिमत्ता (ईआई) एक ऐसे कारक के रुप में कार्य करती है जो अनुभूतियों और भावनाओं का मिलान कराती है। यह लचीलापन, प्रेरणा, सहानुभूति, तर्क, तनाव प्रबंधन, संचार और कई सामाजिक स्थितियों और संघर्षों को पढ़ने और मार्गदर्शन करने की हमारी क्षमता में वृद्धि करती है। 'द एक्सप्रेशन ऑफ द इमोशन्स इन मैन एंड एनिमल्स' में अपने भौतिकवादी सिद्धांत के अनियंत्रित विकास का समर्थन करने के प्रयास में भावनाओं की अभिव्यक्ति पर शोध किया। उन्होंने प्रस्तावित किया कि, जानवरों में पाए जाने वाले अन्य लक्षणों की तरह, भावनाएं भी स्पष्ट रूप से विकसित हुईं और समय के साथ अनुकूलित हुईं। उनके काम ने न केवल जानवरों और विशेष रूप से मनुष्यों में चेहरे के भावों को देखा, बल्कि मनुष्यों और अन्य जानवरों के व्यवहार के बीच समानताओं को इंगित करने का भी प्रयास किया(1)।

सामाजिक बुद्धि की अवधारणा के अनुसार सामाजिक बुद्धिमत्ता पुरुषों और महिलाओं और लड़कों और लड़कियों को समझने और प्रबंधित करने की क्षमता, मानवीय सम्बन्धों में बुद्धिमानी से कार्य करने की क्षमता है(2)। इस प्रकार यह पारस्परिक बुद्धिमत्ता के बराबर है, जो हॉवर्ड गार्डनर के बहुविध बुद्धिमत्ता के सिद्धांत में पहचानी गई बुद्धिमत्ता के प्रकारों में से एक है, और मन के सिद्धांत से निकटता से सम्बन्धित है। विभिन्न बुद्धि परीक्षणों में दृष्टिकोण, अनुभव और संवेगात्मक कार्यप्रणाली जैसे गैर-बौद्धिक कारकों के महत्व पर जोर दिया है और तर्क दिया गया है कि ये तत्व संज्ञानात्मक कार्यों पर किसी व्यक्ति के प्रदर्शन को महत्व पूर्ण रूप से प्रभावित करते हैं।

मनोवैज्ञानिक मेयर और सलोवे द्वारा पहली बार संवेगात्मक बुद्धिमत्ता, शब्द गढ़ा गया(3), जिसका तात्पर्य किसी व्यक्ति की संवेगात्मक जानकारी को सही और प्रभावी ढंग से समझने, संसाधित करने और विनियमित करने की क्षमता से है, अपने भीतर और दूसरों में, और व्यक्ति इस जानकारी का उपयोग किसी की सोच और कार्यों को निर्देशित करने और दूसरों को प्रभावित करने के लिए करता है। संवेगात्मक बुद्धिमत्ता हमें एक पूर्ण और खुशहाल जीवन के मार्ग पर ले जा सकती है, जिसके माध्यम से संवेगात्मक प्रतिक्रियाओं पर बुद्धिमत्ता के मानकों को लागू किया जा सकता है और यह समझा जा सकता है कि ये प्रतिक्रियाएँ भावनाओं के बारे में विशेष मान्यताओं के साथ तार्किक रूप से सुसंगत या असंगत हो सकती हैं।

डैनियल गोलमैन ने संवेगात्मक बुद्धिमत्ता (ईआई) पर अपना मॉडल प्रस्तुत किया। उनका सिद्धांत बताता है कि सफलता और प्रभावी नेतृत्व की भविष्यवाणी करने में संवेगात्मक बुद्धिमत्ता पारंपरिक रुप से अधिक महत्वपूर्ण हो सकती है। गोलमैन के मॉडल के पाँच प्रमुख घटक आत्म-जागरूकता, आत्म-नियमन, प्रेरणा, सहानुभूति और सामाजिक कौशल हैं। ये योग्यताएँ भावनाओं को प्रबंधित करने और शिक्षा और नेतृत्व सहित विभिन्न क्षेत्रों में प्रभावी सम्बन्धों को बढ़ावा देने के लिए आवश्यक हैं। गोलमैन की अंतर्दृष्टि ने व्यक्तिगत और व्यावसायिक दोनों संदर्भों में मानव व्यवहार और पारस्परिक गतिशीलता को समझने के तरीके को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित किया है(4)।

इस क्षेत्र में हुए शोध कार्यों से स्पष्ट हो चुका है कि संवेगात्मक बुद्धिमत्ता व्यक्तिगत और संगठनात्मक सफलता के लिए बहुत जरूरी हो गई है। संगठन भावनात्मक रूप से बुद्धिमान व्यक्तियों को नियुक्त करने और विकसित करने के महत्व को पहचान रहे हैं जो आधुनिक कार्यस्थल की जटिलताओं को प्रभावी ढंग से नेविगेट कर सकते हैं।

कार्यस्थल में संवेगात्मक बुद्धिमत्ता व्यक्तियों को तनाव और दबाव को अधिक प्रभावी ढंग से संभालने में सक्षम बनाती है। अपनी भावनाओं के बारे में जागरूक होने और उन्हें नियंत्रित करने की क्षमता होने से व्यक्ति उच्च दबाव वाली

स्थितियों में शांत और संयमित रह सकते हैं। इससे उन्हें स्पष्ट रूप से सोचने, तर्कसंगत निर्णय लेने और चुनौती पूर्ण परिस्थितियों में भी अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने की अनुमति मिलती है। संवेगात्मक बुद्धिमत्ता कार्यस्थल के भीतर संचार और पारस्परिक संबंधों को बढ़ाती है। अपनी और दूसरों की भावनाओं को समझकर, कर्मचारी अधिक प्रभावी ढंग से संवाद कर सकते हैं, खुद को स्पष्ट रूप से व्यक्त कर सकते हैं और अपने सहकर्मियों की जरूरतों पर सहानुभूति पूर्वक प्रतिक्रिया दे सकते हैं। इससे बेहतर सहयोग, कम संघर्ष और अधिक सकारात्मक और सामंजस्यपूर्ण कार्य वातावरण बनता है।

शिक्षक एक नेतृत्व कर्ता की भमिका में भी होते हैं और संवेगात्मक बुद्धि उनकी नेतृत्व प्रभावशीलता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। उच्च संवेगात्मक बुद्धिमत्ता वाले नेता अपनी टीमों को प्रेरित और प्रेरित करने के लिए बेहतर ढंग से सुसज्जित होते हैं। वे अपने सहकर्मियों की जरूरतों और आकांक्षाओं को समझ सकते हैं, रचनात्मक प्रतिक्रिया दे सकते हैं और एक सहायक और समावेशी कार्य संस्कृति बना सकते हैं। संवेगात्मक रूप से बुद्धिमान नेता संघर्षों को प्रबंधित करने और विवादों को सुलझाने में भी कुशल होते हैं, जिससे एक सुसंगत और उत्पादक टीम गतिशीलता को बढ़ावा मिलता है। इसके अतिरिक्त, संवेगात्मक बुद्धिमत्ता बेहतर निर्णय लेने में योगदान देती है। अपनी भावनाओं और दूसरों की भावनाओं पर विचार करके, व्यक्ति अधिक सूचित और संतुलित निर्णय ले सकते हैं। संवेगात्मक बुद्धिमत्ता टीम के सदस्यों, हितधारकों और समग्र संगठन पर निर्णयों के संभावित प्रभाव की गहरी समझ की अनुमति देती है। इससे अधिक विचारशील और प्रभावी निर्णय लेने की प्रक्रियाएँ बनती हैं। इसी प्रकार संवेगात्मक बुद्धि शिक्षकों को भी शैक्षिक स्थितियों में सकारात्मक और उत्पादक कार्य वातावरण बनाने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

कार्यस्थल में संवेगात्मक बुद्धिमत्ता व्यक्तियों को तनाव और दबाव को अधिक प्रभावी ढंग से संभालने में सक्षम बनाती है। अपनी भावनाओं के बारे में जागरूक होने और उन्हें नियंत्रित करने की क्षमता होने से, व्यक्ति उच्च दबाव वाली स्थितियों में शांत और संयमित रह सकते हैं। इससे उन्हें स्पष्ट रूप से सोचने, तर्कसंगत निर्णय लेने और चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों में भी अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने की अनुमति मिलती है। संवेगात्मक बुद्धिमत्ता कार्यस्थल के भीतर संचार और पारस्परिक संबंधों को बढ़ाती है। अपनी और दूसरों की भावनाओं को समझकर, कर्मचारी अधिक प्रभावी ढंग से संवाद कर सकते हैं, खुद को स्पष्ट रूप से व्यक्त कर सकते हैं और अपने सहकर्मियों की जरूरतों पर सहानुभूति पूर्वक प्रतिक्रिया दे सकते हैं। इससे बेहतर सहयोग, कम संघर्ष और अधिक सकारात्मक और सामंजस्यपूर्ण कार्य वातावरण बनता है।

2. सम्बन्धित साहित्य की समीक्षा

विभिन्न शोध परिणामों यह पाया गया कि संवेगात्मक रूप से परिपक्व अध्यापक विद्यार्थियों के प्रेरणा स्तर में सुधार करके, सृजनात्मक कार्यों में उनकी उपलब्धि सुधार, नेतृत्व क्षमता का विकास, समूह की भावना विकसित करने में मदद करते हैं। संवेगात्मक बुद्धि से सम्बन्धित कई अध्ययन किये गये जिनमें वेकंटपति वर्तमान में हुए शोध कार्यो से स्पष्ट हो चुका है कि संवेगात्मक बुद्धिमत्ता व्यक्तिगत और संगठनात्मक सफलता के लिए बहुत जरूरी हो गई है। संगठन भावनात्मक रूप से बुद्धिमान व्यक्तियों को नियुक्त करने और विकसित करने के महत्व को पहचान रहे हैं जो आधुनिक कार्यस्थल की जटिलताओं को प्रभावी ढंग से नेविगेट कर सकते हैं।

जिन अध्यापक एवं अध्यापिकाओं की संवेगात्मक बुद्धि ज्यादा होती है उनमें व्यवसायिक तनाव कम तथा वे शिक्षक अधिक प्रभावशीलता होते है(5) क्योंकि संवेगात्मक बुद्धि और शिक्षण प्रभावशीलता धनात्मक रूप से सम्बन्धित होते हैं(6)। इसी प्रकार अध्यापकों की सवेगात्मक बुद्धि और उनके व्यक्तित्व में भी धनात्मक सम्बन्ध होता है(7)। अध्ययनों

से पता चलता है कि अधिकांश शिक्षक औसत संवेगात्मक बुद्धि प्रदर्शित करते हैं, लेकिन लिंग, उम्र, शैक्षणिक एवं व्यवसायिक योग्यता और निवास व प्रबंधन के आधार पर संवेगात्मक बुद्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया(8)। एक और अध्ययन से स्पष्ट हुआ कि उम्र, लिंग, वैवाहिक स्थिति, शिक्षण अनुभव, शैक्षिक योग्यता, स्कूल के प्रकार, परिवार के आकार का संवेगात्मक बुद्धि से कोई सार्थक सम्बन्ध नहीं है(9)। शोध यह भी दर्शाते हैं कि लिंग के आधार पर प्राइमरी टीचर की संवेगात्मक बुद्धि की विमाओं में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया(10)। पुन: एक शोध से स्पष्ट होता है कि लिंग का संवेगात्मक बुद्धि पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है, लेकिन शिक्षकों के व्यक्तिगत और व्यावसायिक जीवन में संवेगात्मक बुद्धिमत्ता का बहुत महत्व होता है(11)| शिक्षक तैयारी के ढाँचों में संवेगात्मक बुद्धिमत्ता का संस्थागतकरण होना चाहिए। साथ ही संवेगात्मक बुद्धिमत्ता दक्षताओं के लिए मूल्यांकन के लिए साक्ष्य आधारित प्रशिक्षण व्यवस्था और नीतिगत प्रावधानों में परिवर्तन की भी आवश्यकता है। तभी समकालीन शैक्षिक परिवेशों के जटिल संवेगात्मक और सामाजिक आयामों को समझने के लिए संवेगात्मक बुद्धिमत्ता को एक आवश्यक योग्यता के रूप में स्थापित करके शिक्षक प्रभावशीलता की वृद्धि में योगदान दिया जा सके(12)|

पूर्व में किए गए शोध परिणाम स्पष्ट करते हैं कि संवेगात्मक रूप से परिपक्व अध्यापक विद्यार्थियों के प्रेरणा स्तर में सुधार करके, सृजनात्मक कार्यों में उनकी उपलब्धि सुधार, नेतृत्व क्षमता का विकास, समूह की भावना विकसित करने में मदद करते हैं। संवेगात्मक बुद्धि से सम्बन्धित कई अध्ययन किये गये हैं परन्तु कोई भी अध्ययन मॉडल प्राथमिक विद्यालय एवं प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापक एवं अध्यापिकाओं की संवेगात्मक बुद्धि से लेकर प्राप्त नहीं हुआ है| इसलिए शोधकर्ता ने मॉडल प्राथमिक एवं प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापक एवं अध्यापिकाओं की संवेगात्मक बुद्धि को जानने के लिए यह शोध करने का निर्णय लिया|

3. अध्ययन की आवश्यकता, एवं महत्व

शिक्षक एक नेतृत्वकर्ता की भमिका में भी होते हैं और संवेगात्मक बुद्धि उनकी नेतृत्व प्रभावशीलता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। उच्च संवेगात्मक बुद्धिमत्ता वाले नेता अपनी टीमों को प्रेरित और प्रेरित करने के लिए बेहतर ढंग से सुसज्जित होते हैं। वे अपने सहकर्मियों की जरूरतों और आकांक्षाओं को समझ सकते हैं, रचनात्मक प्रतिक्रिया दे सकते हैं और एक सहायक और समावेशी कार्य संस्कृति बना सकते हैं। संवेगात्मक रूप से बुद्धिमान नेता संघर्षों को प्रबंधित करने और विवादों को सुलझाने में भी कुशल होते हैं, जिससे एक सुसंगत और उत्पादक टीम गतिशीलता को बढ़ावा मिलता है। इसके अतिरिक्त, संवेगात्मक बुद्धिमत्ता बेहतर निर्णय लेने में योगदान देती है। अपनी भावनाओं और दूसरों की भावनाओं पर विचार करके, व्यक्ति अधिक सूचित और संतुलित निर्णय ले सकते हैं। संवेगात्मक बुद्धिमत्ता टीम के सदस्यों, हितधारकों और समग्र संगठन पर निर्णयों के संभावित प्रभाव की गहरी समझ की अनुमति देती है। इससे अधिक विचारशील और प्रभावी निर्णय लेने की प्रक्रियाएँ निर्मित होती हैं। इसी प्रकार संवेगात्मक बुद्धि शिक्षकों को भी शैक्षिक स्थितियों में सकारात्मक और उत्पादक कार्य वातावरण बनाने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

4. अध्ययन के उद्देश्य

1. प्राथमिक विद्यालयों में अध्यापनरत अध्यापकों एवं अध्यापिकाओं की सांवेगिक बुद्धि का अध्ययन करना।
2. मॉडल प्राथमिक विद्यालयों में अध्यापनरत अध्यापकों एवं प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों की सांवेगिक बुद्धि का अध्ययन करना।
3. मॉडल प्राथमिक विद्यालयों में अध्यापनरत अध्यापिकाओं एवं प्राथमिक विद्यालयों की अध्यापिकाओं की सांवेगिक बुद्धि का अध्ययन करना।
4. मॉडल प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापक एवं अध्यापिकाओं की सांवेगिक बुद्धि का अध्ययन करना।

5. मॉडल प्राथमिक विद्यालयों के कुल अध्यापकों एवं प्राथमिक विद्यालयों के कुल अध्यापकों की सांवेगिक बुद्धि का अध्ययन करना।

5. अध्ययन की परिकल्पनाएं

1. प्राथमिक विद्यालयों में अध्यापनरत अध्यापकों एवं अध्यापिकाओं की संवेगात्मक बुद्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. मॉडल प्राथमिक विद्यालयों में अध्यापनरत अध्यापकों एवं प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों की संवेगात्मक बुद्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
3. मॉडल प्राथमिक विद्यालयों में अध्यापनरत अध्यापिकाओं एवं प्राथमिक विद्यालयों की अध्यापिकाओं की संवेगात्मक बुद्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
4. मॉडल प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापक एवं अध्यापिकाओं की संवेगात्मक बुद्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
5. मॉडल प्राथमिक विद्यालयों के कुल अध्यापकों एवं प्राथमिक विद्यालयों के कुल अध्यापकों की संवेगात्मक बुद्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

6. शोध प्रक्रिया

- **विधि**

वर्तमान शोध की प्रकृति वर्णनात्मक है, इसलिए शोधकर्ता द्वारा चयनित शिक्षकों से आंकड़े एकत्र करने के लिए वर्णनात्मक शोध उपागम की सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

- **अध्ययन की जनसंख्या**

अध्ययन की जनसंख्या के रूप में बरेली जनपद के 288 मॉडल प्राथमिक विद्यालयों एवं 1279 प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापक अध्यापिकाओं एवं उनमें अध्ययनरत विद्यार्थियों को चयनित किया गया है।

- **न्यादर्श एवं न्यादर्श चयन विधि**

वर्तमान शोध के लिए उत्तर प्रदेश राज्य के बरेली जिले में स्थित प्राथमिक विद्यालयों एवं मॉडल प्राथमिक विद्यालयों में से पहले चरण में लाटरी विधि से जनसंख्या का 10 प्रतिशत प्राथमिक विद्यालय एवं 10 प्रतिशत मॉडल प्राथमिक विद्यालयों का चयन किया गया। दूसरे चरण में इन्हीं चयनित विद्यालयों से कुल 452 शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं का चयन किया गया।

- **शोध उपकरण**

इस शोध में शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि से सम्बन्धित आंकड़ों के संकलन हेतु शर्मा, एच. एवं सिंह, पी.पी.(13) प्रमाणीकृत अध्यापक संवेगात्मक बुद्धि मापनी (TEIS) का प्रयोग प्रस्तुत शोध में किया गया है। यह 54 पद वाली मापनी लिकर्ट मापनी के समान है। जिसमें संवेगात्मक बुद्धि की चार विमाएं शामिल हैं। यह अध्यापकों की संवेगात्मक बुद्धि मापने के लिए है परन्तु यह प्राथमिक अध्यापकों की संवेगात्मक बुद्धि मापने के लिए सर्वथा उपयुक्त है। मापनी में सतही वैधता के साथ-साथ विषय वस्तु वैधता भी है, क्योंकि उपकरण विकास के प्रत्येक चरण पर विषेशज्ञों और शिक्षकों के साथ चर्चा की गई थी तथा उनके सुझावों के आधार पर मापनी के कथनों में सुधार किया गया। शोधकर्ता द्वारा मापनी की स्पिलिट हॉफ विधि द्वारा विश्वसनीयता की गणना की गई एवं स्पीयरमैन ब्राउन द्वारा 0.01 स्तर पर सार्थकता स्तर पर विश्वसनीयता गुणांक 0.83 पाया गया।

- **परिसीमाएं**

1. यह अध्ययन उत्तर प्रदेश के बरेली जिले तक ही सीमित है।
2. अध्ययन में सरकार द्वारा संचालित मॉडल प्राथमिक विद्यालय तथा प्राथमिक विद्यालयों को चयनित किया गया है।
3. इन्हीं विद्यालयों में अध्यापनरत अध्यापक एवं अध्यापिकाओं को न्यादर्श के रुप में चयन किया गया है।

7. आंकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या

अध्ययन में शामिल 452 प्राथमिक अध्यापकों एवं अध्यापिकाओं से संग्रहित आंकड़ों का शोध के उद्देश्यों के अनुरुप विलेश्षण किया गया और शून्य परिकल्पनाओं का परीक्षण करके निम्नानुसार परिणाम प्राप्त किए गए हैं -

शून्य परिकल्पना-1 प्राथमिक विद्यालयों में अध्यापनरत अध्यापकों एवं अध्यापिकाओं की सांवेगिक बुद्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका संख्या-1: प्राथमिक विद्यालयों में अध्यापनरत अध्यापकों एवं अध्यापिकाओं की सांवेगिक बुद्धि के मध्यमानों की तुलना

समूह	संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	स्वतन्त्रता अंश	टी-मान
प्राथमिक विद्यालय के अध्यापक	74	200.85	27.42	247	1.90 अ.सा.
प्राथमिक विद्यालय की अध्यापिकाएं	175	208.26	28.64		

सार्थकता के स्तर 0.05 पर असार्थक (अ.सा.)

आरेख संख्या-1: प्राथमिक विद्यालयों में अध्यापनरत अध्यापकों एवं अध्यापिकाओं की सांवेगिक बुद्धि के मध्यमान एवं प्रमाणिक विचलन

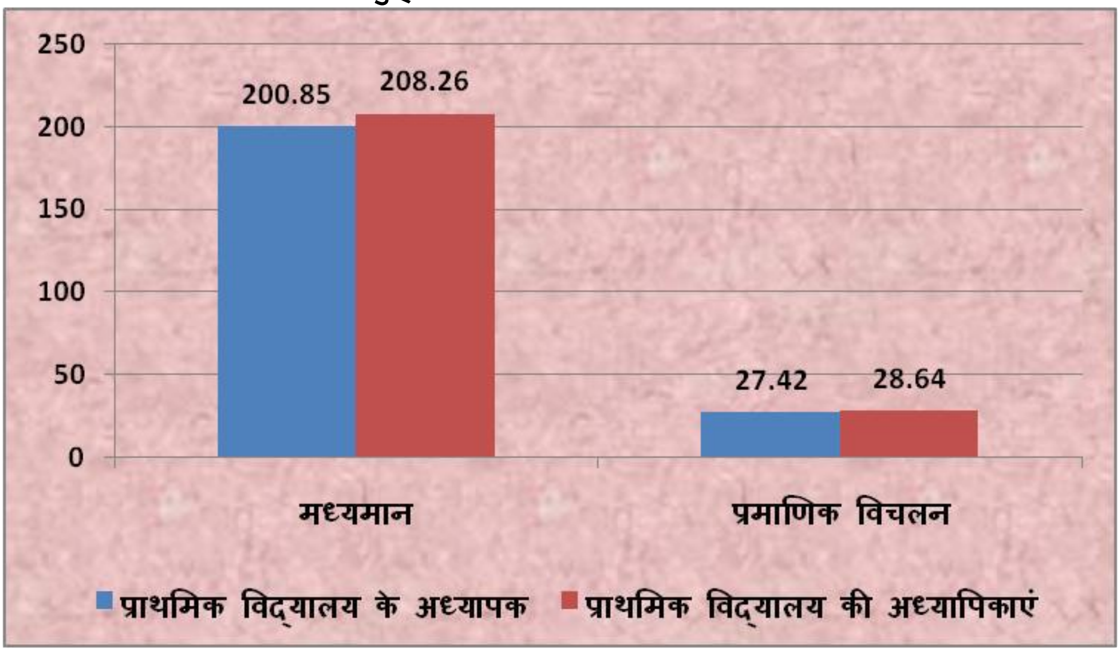

उपरोक्त तालिका-1 एवं आरेख-1 से प्राप्त आंकड़ों के अनुसार प्राथमिक विद्यालय की अध्यापिकाओं की सांवेगिक बुद्धि के प्राप्तांकों का मध्यमान एवं प्रमाणिक विचलन क्रमशः 208.26 व 28.64 है, जबकि प्राथमिक विद्यालय के अध्यापकों की सांवेगिक बुद्धि के प्राप्ताकों का मध्यमान व प्रमाणिक विचलन क्रमशः 200.85 व 27.42 है। इससे स्पष्ट होता है

कि अध्यापिकाओं की सांवेगिक बुद्धि का स्तर अध्यापकों से थोड़ा अधिक प्रतीत होता है। प्राथमिक विद्यालय के अध्यापकों एवं अध्यापिकाओं के समूहों के मध्यमानों के मध्य अन्तर के लिए 247 स्वतंत्रता अंश पर टी-मान 1.90 प्राप्त हुआ जोकि 0.05 सार्थकता स्तर पर टी-तालिका के मान 1.984 से कम है। इससे स्पष्ट होता है कि दोनों समूहों की सांवेगिक बुद्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। अत: उपरोक्त शून्य परिकल्पना स्वीकृत की जा सकती है।

मनोवैज्ञानिक रूप से महिलाएं, पुरुषों की तुलना में अधिक भावात्मक होती हैं, इसलिए उन्हें छोटे बच्चों के शिक्षकों के रूप में सबसे अधिक प्राथमिकता दी जाती है। हालाँकि शिक्षक प्रशिक्षण के दौरान पुरुष एवं महिला प्रशिक्षुओं में भावात्मक कौशलों के विकास के लिए प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है। चूँकि महिलाएं मनोवैज्ञानिक रूप से पुरुषों से अधिक भावात्मक कुशल होती हैं इसलिए अध्यापिकाएं, अध्यापकों की तुलना अधिक संवेगात्मक बुद्धि स्तर प्रदर्शित कर सकती हैं।

शून्य परिकल्पना-2: मॉडल प्राथमिक विद्यालयों में अध्यापनरत अध्यापकों एवं प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों की सांवेगिक बुद्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका संख्या-2: मॉडल प्राथमिक विद्यालय एवं प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों की सांवेगिक बुद्धि के मध्यमानों की तुलना

समूह	संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	स्वतन्त्रता अंश	टी-मान
मॉडल प्राथमिक विद्यालय के अध्यापक	66	212.45	29.71	139	2.41*
प्राथमिक विद्यालय के अध्यापक	75	200.85	27.42		

*=सार्थकता के स्तर 0.05 पर सार्थक

आरेख संख्या-2: मॉडल प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों एवं प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों की सांवेगिक बुद्धि के मध्यमान एवं प्रमाणिक विचलन

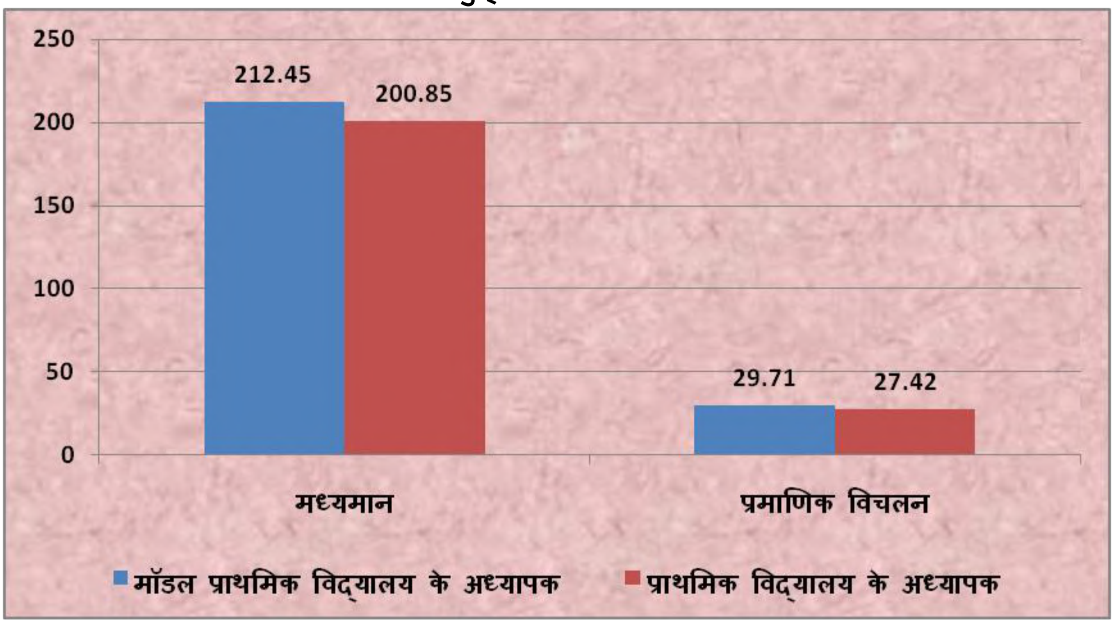

तालिका-2 एवं आरेख-2 के अनुसार मॉडल प्राथमिक विद्यालय के अध्यापकों की सांवेगिक बुद्धि के प्राप्तांकों का मध्यमान एवं प्रमाणिक विचलन क्रमशः 212.45 व 29.71 है, जबकि प्राथमिक विद्यालय के अध्यापकों की सांवेगिक बुद्धि के प्राप्ताकों का मध्यमान व प्रमाणिक विचलन क्रमशः 200.85 व 27.42 है। इससे स्पष्ट होता है कि मॉडल

ISSN(o): 2581-6241
Impact Factor: 7.384

प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों की सांवेगिक बुद्धि का स्तर प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों से अधिक प्रतीत होता है। इसके पश्चात मॉडल प्राथमिक विद्यालयों एवं प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों के समूहों के मध्यमानों के मध्य अन्तर के लिए 139 स्वतंत्रता अंश पर टी-मान 2.41 प्राप्त हुआ जोकि 0.05 सार्थकता स्तर पर टी-तालिका के मान 1.984 से अधिक है। इससे स्पष्ट होता है कि दोनों समूहों की सांवेगिक बुद्धि में सार्थक अन्तर है। इस प्रकार यह निष्कर्ष निकलता है कि मॉडल प्राथमिक विद्यालयों में अध्यापनरत अध्यापकों एवं प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों की सांवेगिक बुद्धि में सार्थक अन्तर पाया गया। जिसके आधार पर उपरोक्त शून्य परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है।

दोनों समूहों की सांवेगिक बुद्धि में सार्थक अन्तर होने का कारण कि जब किसी विशेष उद्देश्य को प्राप्त करने अच्छी शिक्षण क्षमता शिक्षकों को चयनित किया जाता है तो वे भावात्मक रूप से उस उद्देश्य या कार्य से बेहतर ढंग से जुड़ जाते हैं और उनकी अनुभूति के स्तर में वृद्धि होती है और अनुभूति सांवेगिक बुद्धि का सबसे प्रमुख घटक है। इसीलिए मॉडल प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों द्वारा बेहतर सांवेगिक बुद्धि का प्रदर्शन किया गया होगा।

शून्य परिकल्पना-3: मॉडल प्राथमिक विद्यालयों में अध्यापनरत अध्यापिकाओं एवं प्राथमिक विद्यालयों की अध्यापिकाओं की सांवेगिक बुद्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका संख्या-3: मॉडल प्राथमिक विद्यालयों एवं प्राथमिक विद्यालयों की अध्यापिकाओं की सांवेगिक बुद्धि के मध्यमानों की तुलना

समूह	संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	स्वतन्त्रता अंश	टी-मान
मॉडल प्राथमिक विद्यालय की अध्यापिकाएं	137	212.74	28.73	309	1.37 अ.सा.
प्राथमिक विद्यालय की अध्यापिकाएं	174	208.26	28.64		

सार्थकता के स्तर 0.05 पर असार्थक

आरेख संख्या-3: मॉडल प्राथमिक विद्यालयों एवं प्राथमिक विद्यालयों की अध्यापिकाओं की सांवेगिक बुद्धि के मध्यमान एवं प्रमाणिक विचलन

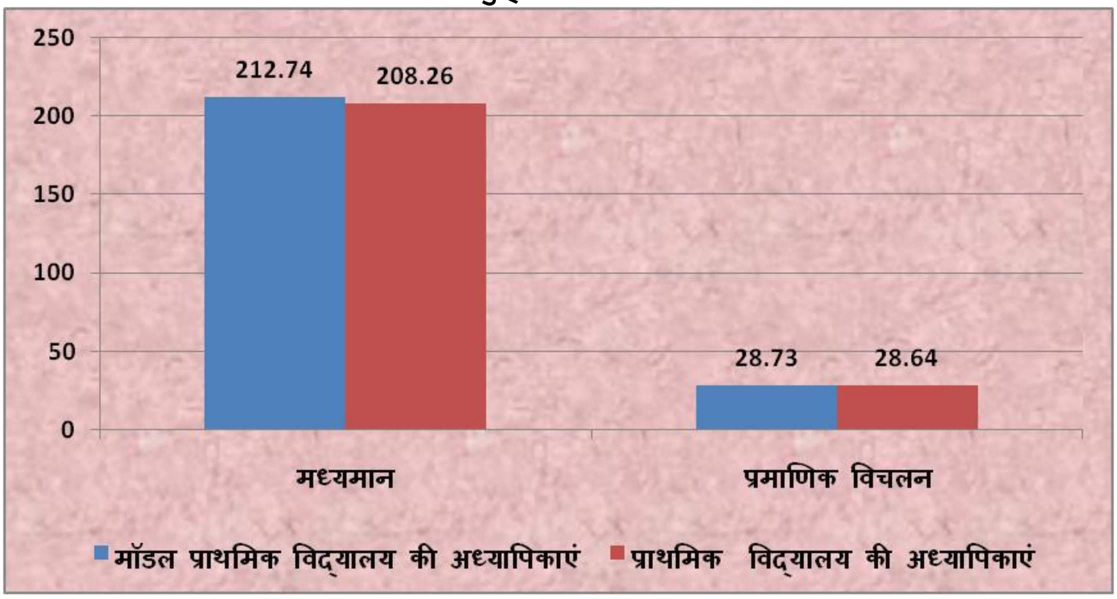

उपरोक्त तालिका-3 एवं आरेख-3 के अनुसार मॉडल प्राथमिक विद्यालय की अध्यापिकाओं की सांवेगिक बुद्धि के प्राप्तांकों का मध्यमान और प्रमाणिक विचलन क्रमशः 212.74 व 28.73 है, जबकि प्राथमिक विद्यालय की अध्यापिकाओं की सांवेगिक बुद्धि के प्राप्ताकों का मध्यमान और प्रमाणिक विचलन क्रमशः 208.26 व 28.64 है। इससे स्पष्ट होता

Shikshan Sanshodhan : Journal of Arts, Humanities and Social Sciences
Monthly, Peer-Reviewed, Refereed, Indexed Journal
Volume - 8, Issue - 7, July - 2025
ISSN(o): 2581-6241
Impact Factor: 7.384

है कि मॉडल प्राथमिक विद्यालयों की अध्यापिकाओं की सांवेगिक बुद्धि का स्तर प्राथमिक विद्यालय की अध्यापिकाओं से थोडा सा अधिक प्रतीत होता है। इसके पश्चात गणना करने पर मॉडल प्राथमिक विद्यालयों एवं प्राथमिक विद्यालयों की अध्यापिकाओं के समूहों के मध्यमानों के मध्य अन्तर के लिए 309 स्वतंत्रता अंश पर टी-मान 1.370 प्राप्त हुआ जोकि 0.05 सार्थकता स्तर पर टी-तालिका के मान 1.984 से कम है। इससे निष्कर्ष निकलता है कि दोनों समूहों की सांवेगिक बुद्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

अतः यह स्पष्ट हुआ कि मॉडल प्राथमिक विद्यालयों एवं प्राथमिक विद्यालयों की अध्यापिकाओं की सांवेगिक बुद्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया, इसके आधार पर यह शून्य परिकल्पना स्वीकृत की जा सकती है।

मॉडल प्राथमिक विद्यालयों की अध्यापिकाओं की सांवेगिक बुद्धि दूसरे समूह की अध्यापिकाओं से थोड़ी सी बेहतर प्रतीत होती है लेकिन दोनों की सांवेगिक बुद्धि में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया है। इन दोनों समूहों की सांवेगिक बुद्धि में सार्थक अन्तर ना होने का कारण उनका एक ही लिंग वर्ग से होना हो सकता है क्योंकि दोनों वर्गों में महिलाएं ही शामिल हैं। महिलाएं काफी हद तक एक जैसी भावात्मक अनुभूति का परिचय देती हैं इसमें उनके कार्य स्थल का कोई सार्थक प्रभाव पड़ने की सम्भावना कम होती है।

शून्य परिकल्पना-4: मॉडल प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापक एवं अध्यापिकाओं की सांवेगिक बुद्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका संख्या-4: मॉडल प्राथमिक विद्यालय के अध्यापक एवं अध्यापिकाओं की सांवेगिक बुद्धि के मध्यमानों की तुलना

समूह	संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	स्वतन्त्रता अंश	टी-मान
मॉडल प्राथमिक विद्यालय के अध्यापक	66	212.45	29.71	201	0.060 अ.सा.
मॉडल प्राथमिक विद्यालय की अध्यापिकाएं	137	212.74	28.72		

सार्थकता के स्तर 0.05 पर असार्थक(अ.सा.)

आरेख संख्या-4: मॉडल प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापक एवं अध्यापिकाओं की सांवेगिक बुद्धि के मध्यमान एवं प्रमाणिक विचलन

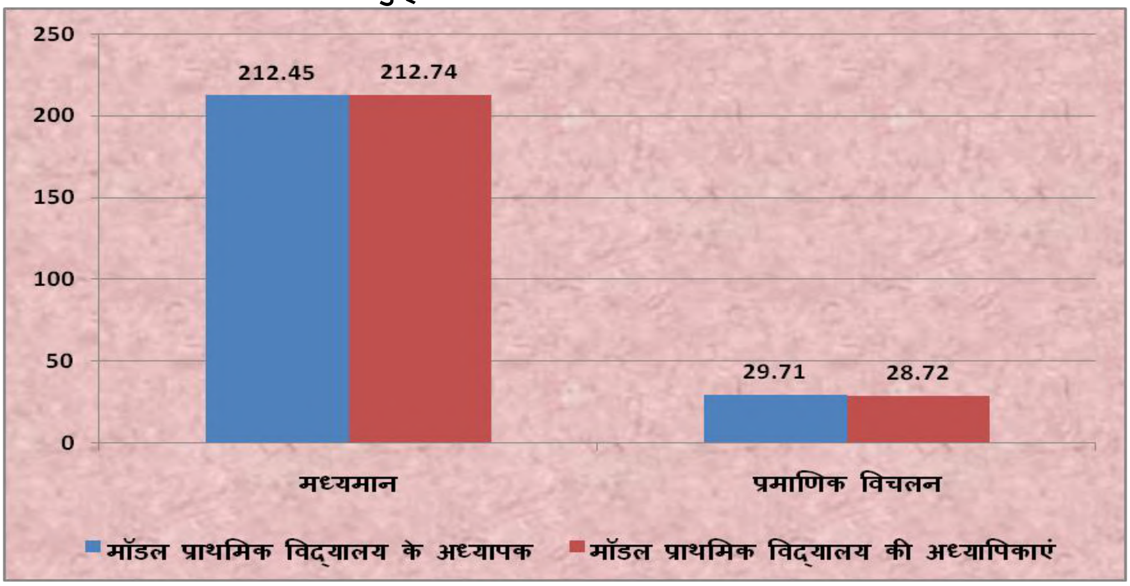

उपरोक्त तालिका-4 एवं आरेख-4 के अनुसार मॉडल प्राथमिक विद्यालय के अध्यापकों की सांवेगिक बुद्धि के प्राप्तांकों का मध्यमान और प्रमाणिक विचलन क्रमशः 212.45 व 29.71 है, जबकि अध्यापिकाओं की सांवेगिक बुद्धि के प्राप्ताकों का मध्यमान और प्रमाणिक विचलन क्रमशः 212.74 व 28.72 है। इस प्रकार मॉडल प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों और अध्यापिकाओं की सांवेगिक बुद्धि का स्तर समान प्रतीत होता है। दोनों समूहों के मध्यमानों के अन्तर की सार्थकता ज्ञात करने के लिए गणना करने पर दोनों समूहों के मध्यमानों के लिए टी-मान 0.060 प्राप्त हुआ जोकि 201 स्वतंत्रता अंश पर 0.05 सार्थकता स्तर पर टी-तालिका के मान 1.984 से कम है। इससे स्पष्ट होता है कि मॉडल प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों एवं अध्यापिकाओं की सांवेगिक बुद्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। अत: यह शून्य परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।

मॉडल प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों और अध्यापिकाओं द्वारा समान सांवेगिक बुद्धि स्तर प्रदर्शित की गई है। सामान्यतः शिक्षकों के प्रशिक्षण के दौरान उनमें भावात्मक कौशलों के विकास के लिए भी प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है। इस कारण से दोनों समूहों के अध्यापकों एवं अध्यापिकाओं की सांवेगिक बुद्धि का स्तर समान पाया जा सकता है।
शून्य परिकल्पना-5: मॉडल प्राथमिक विद्यालयों के कुल अध्यापकों एवं प्राथमिक विद्यालयों के कुल अध्यापकों की सांवेगिक बुद्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका संख्या-5: मॉडल प्राथमिक विद्यालय के कुल अध्यापकों एवं प्राथमिक विद्यालयों के कुल अध्यापकों की सांवेगिक बुद्धि के मध्यमानों की तुलना

समूह	संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	स्वतन्त्रता अंश	टी-मान
मॉडल प्राथमिक विद्यालय के कुल अध्यापक	203	212.65	28.98	250	2.44*
प्राथमिक विद्यालय के कुल अध्यापक	249	206.03	28.43		

*=सार्थकता के स्तर 0.05 पर सार्थक

आरेख संख्या-5: मॉडल प्राथमिक विद्यालयों के कुल अध्यापकों एवं प्राथमिक विद्यालयों के कुल अध्यापकों की सांवेगिक बुद्धि के मध्यमान एवं प्रमाणिक विचलन

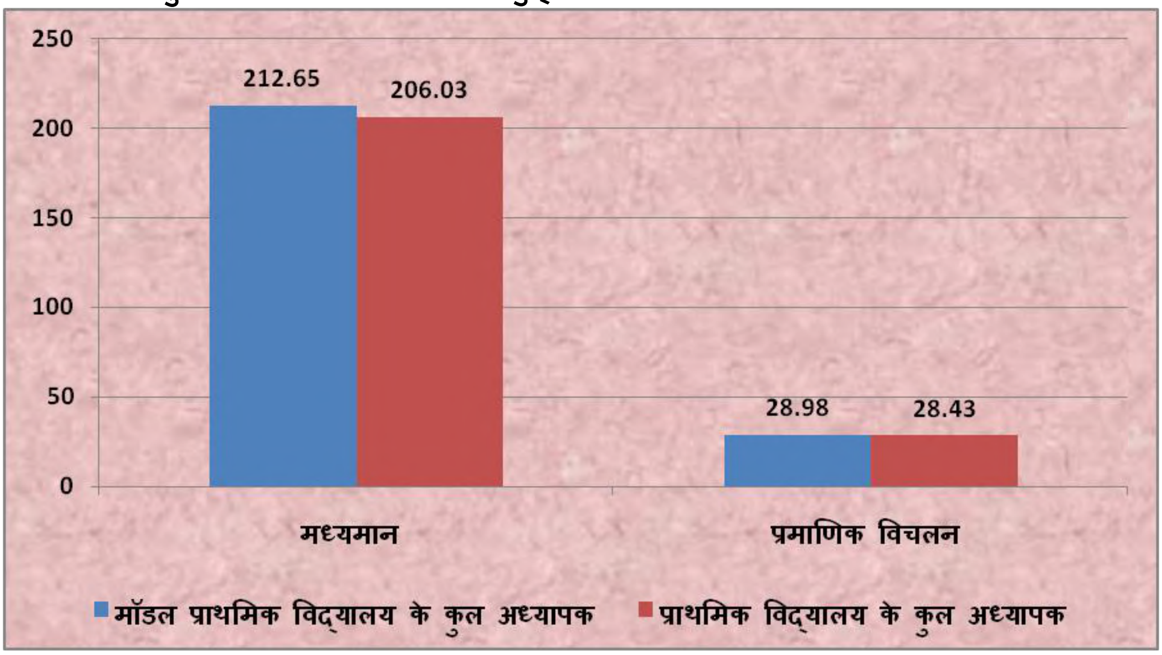

उपरोक्त तालिका-5 एवं आरेख-5 के अनुसार मॉडल प्राथमिक विद्यालय के कुल अध्यापकों की सांवेगिक बुद्धि के प्राप्तांकों का मध्यमान और प्रमाणिक विचलन क्रमशः 212.65 व 28.98 है, जबकि प्राथमिक विद्यालयों के कुल अध्यापकों की सांवेगिक बुद्धि के प्राप्ताकों का मध्यमान और प्रमाणिक विचलन क्रमशः 206.03 व 28.43 है। इसके अनुसार मॉडल प्राथमिक विद्यालयों के कुल अध्यापकों की सांवेगिक बुद्धि का स्तर प्राथमिक विद्यालयों के कुल अध्यापकों से अधिक प्रतीत होता है। दोनों समूहों के मध्यमानों के अन्तर की सार्थकता ज्ञात करने के लिए गणना करने पर दोनों समूहों के मध्यमानों के लिए टी-मान 2.44 प्राप्त हुआ जोकि 250 स्वतंत्रता अंश पर 0.05 सार्थकता स्तर पर टी-तालिका के मान 1.984 से अधिक है।

अतः स्पष्ट है कि मॉडल प्राथमिक विद्यालयों के कुल अध्यापकों एवं प्राथमिक विद्यालयों के कुल अध्यापकों की सांवेगिक बुद्धि में सार्थक अन्तर पाया गया। इस दृष्टि से उपरोक्त शून्य परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है। मॉडल प्राथमिक विद्यालयों कुल अध्यापकों द्वारा एवं प्राथमिक विद्यालयों के कुल अध्यापकों कि तुलना में अधिक सांवेगिक बुद्धि प्रदर्शित की है। दोनों समूहों में सार्थक अन्तर का कारण मॉडल विद्यालयों की सुविधाओं, बेहतर शिक्षकों का चयन, बेहतर कार्य वातावरण हो सकते हैं। कार्य अभिप्रेरणा भी भावात्मक लगाव में वृद्धि करती है इसलिए भी दोनों समूहों की सांवेगिक बुद्धि में अन्तर हो सकता है।

8. परिणाम

i. प्राथमिक विद्यालयों में अध्यापनरत अध्यापकों एवं अध्यापिकाओं की सांवेगिक बुद्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। लेकिन, प्राथमिक विद्यालयों की अध्यापिकाओं ने प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों से थोड़ा सा अधिक सांवेगिक बुद्धि प्रदर्शित की गई।
ii. मॉडल प्राथमिक विद्यालयों में अध्यापनरत अध्यापकों एवं प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों की सांवेगिक बुद्धि में सार्थक अन्तर पाया गया। मॉडल प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों द्वारा प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों से अधिक सांवेगिक बुद्धि का प्रदर्शन किया गया।
iii. मॉडल प्राथमिक विद्यालयों एवं प्राथमिक विद्यालयों की अध्यापिकाओं की सांवेगिक बुद्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। परन्तु, मॉडल प्राथमिक विद्यालयों की अध्यापिकाओं की सांवेगिक बुद्धि का स्तर प्राथमिक विद्यालय की अध्यापिकाओं से थोडा सा अधिक पाया गया।
iv. मॉडल प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों एवं अध्यापिकाओं की सांवेगिक बुद्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। मॉडल प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों और अध्यापिकाओं द्वारा लगभग समान सांवेगिक बुद्धि स्तर का प्रदर्शन किया गया।
v. मॉडल प्राथमिक विद्यालयों के कुल अध्यापकों एवं प्राथमिक विद्यालयों के कुल अध्यापकों की सांवेगिक बुद्धि में सार्थक अन्तर पाया गया। मॉडल प्राथमिक विद्यालयों के कुल अध्यापकों की सांवेगिक बुद्धि का स्तर प्राथमिक विद्यालयों के कुल अध्यापकों से अधिक पाया गया।

9. निष्कर्ष

वर्तमान शोध के परिणामों से निष्कर्ष निकलता है कि शिक्षकों की सांवेगिक बुद्धि को प्रभावित करने वाले कारकों या परस्थितियों को सेवा पूर्व एवं सेवारत शिक्षक प्रशिक्षण के दौरान समुचित ढंग से विकास करने पर जोर देने की आवश्यकता है। इसके साथ ही शिक्षकों की उच्च सांवेगिक बुद्धि का प्रभाव विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ता है। इससे यह भी निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि उच्च सांवेगिक बुद्धि वाले शिक्षकों की कक्षाओं में सहभागिता का स्तर भी उच्च रहता है। जो शिक्षक संवेगात्मक रूप से अपने व्यावसायिक दायित्वों से अधिक जुड़े रहते हैं उनकी शिक्षण क्षमता, विद्यार्थियों की आवश्यकता के अनुसार शिक्षण विधियों का चयन, विद्यार्थियों की कठिनाईयों की अनुभूति

आदि कारक उनकी शिक्षण क्षमता को सकारात्मक रूप से प्रभावित कर सकते हैं। इसलिए सेवारत शिक्षकों एवं भावी शिक्षकों में संवेगात्मक बुद्धिमत्ता को बढ़ाने की रणनीतियाँ सकारात्मक कक्षा के वातावरण के लिए जरूरी है। इन विधियों में आत्म-जागरूकता अभ्यास में शामिल होना, संवेगात्मक विनियमन तकनीकों का अभ्यास करना, सहानुभूति प्रशिक्षण प्रदान करना और व्यावसायिक विकास कार्यशालाओं में भागीदारी को प्रोतसाहित करना आदि को शामिल किया जा सकता है।

सन्दर्भ सूची :

1. Darwin, C. (2007) [1872], *The expression of the emotions in man and animals*. New York: Filiquarian. ISBN978-0-8014-1990-4.
2. Thorndike, Edward Lee (1 January 1920), Intelligence and its uses. *Harper's Magazine.*
3. Salovey, P. & Mayer, J.D. (1990) Emotional Intelligence imagination, Cognition & personality, 9(3), 185-211.
4. Golman, D. (1995), *Emotional Intelligence : Why it can matter more then IQ*. New York : Bantam Book.
5. Kaut, Amit, saroj, Richa (2011), Study of teacher effectiveness and occupational stress in relation to emotional Intelligence among teachers at secondary stage. *Journal of History & Social Science*, II(I), Jan-Jun 2011.
6. Shahzad, S. (2012), Relationship between teacher emotional Intelligence and their teaching effectiveness. Institute of education and research university of the Punjab Lahore (academic.edu/shumall sharead)
7. Kant , Ravi (2014), Inter relationship between personality, traits and emotional Intelligence of Secondary teachers in India. *International Journal of Evaluation and Research in Education* (IGRS) 3(3), 158-168.
8. Venkatpati, C. (2015), Emotional Intelligence of primary School Teacher. *International Journal of Engineering Research and Management*, 02(11). 2349- 2058.
9. Paul, A. Stephen. & Thavaraj, H. Smuel (2015), Emotional Intelligence among School teacher in Nazareth, Thoothukudi District Tamilnadu. *IJEMR,*5(04), 1-12.
10. Kumar, Bijendra (2016), A study of emotional Intelligence of Primary School Teacher Trainees. *Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies,* 4(26), 2678-2683.
11. Pandey, M. & Sharma, D. (2024). Research on emotional intelligence among Indian teachers: A Systematic Review and meta-analysis of its correlation with health parameters and impact of gender. *F1000Res.* 12, 1519. doi: 10.12688/f1000research.143151.1.
12. Gope, Monojit & Subudhi, S. C. (2025). Emotional Intelligence as a Predictor of Effective Classroom Practices among Elementary School Teachers. *International Journal of Research Culture Society,* 9(5). DOIs:10.2017/IJRCS/202505018
13. Sharma, H. & Singh, .P.P. (2023). Teacher Emotional Intelligence Scale (TEIS). (MJP Rohilkhand University, Bareilly, Uttar Pradesh)

*****